मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों की हृदयशून्यता है देश की सबसे बड़ी समस्या : राधाकृष्ण

'गांधी के विचारों में मूल्य आधारित एवं नैतिक नेतृत्व' पर हुआ विमर्श

वर्धा, 15 अक्टूबर, 2012; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के फ्यूज़ी गुरूजी शांति अध्ययन केंद्र द्वारा 'गांधी के विचारों में मूल्य आधारित एवं नैतिक नेतृत्व' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान गांधीवादी चिंतक व विशिष्ट नागरिक शोभना राधाकृष्ण ने कहा कि मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों की हृदयशून्यता ही देश की सबसे बड़ी समस्या है। बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वे विकास में अपनी सक्रिय भूमिका अदा करें। संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो.अनिल के.राय 'अंकित' ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर गांधीवादी चिंतक रवि चोपड़ा तथा संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं फ्यूज़ी गुरूजी शांति अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो.मनोज कुमार मंचस्थ थे।

शोभना राधकृष्ण ने कई संस्मरणों को साझा करते हुए बताया कि मोहन दास करम चंद गांधी ने सत्य पर समाज के आवरण को हावी नहीं होने दिया, जो गुण इंसान का है वह पूरे समाज में मूल्य के रूप में स्थापित होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सेवाग्राम आश्रम प्रयोगशाला थी, एक आम इंसान को सत्याग्रही बनाने की। जो नियम पूरी जिंदगी पालन किया जाए, वह व्रत है, का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आज की स्थितियों को देखकर लगता है कि गांधीजी के दौर का पुन: आगमन हो चुका है। गांधी जी का मानना था कि सारे धर्मों का सार अंतत: एक ही, 'सत्य' है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो.अनिल के.राय 'अंकित' ने कहा कि गांधीजी के जीवन दर्शन का पुनर्पाठ हम जितनी बार करते हैं, उतना ही गांधी को अधिक समझ पाते हैं। आज और 1915 की समस्याएं लगभग एक जैसी हैं। गांधीजी से निकली धाराएं आज अन्ना और केजरीवाल के रूप में हमारे सामने है। जब हम अच्छा काम करते हैं तो निर्भय होते हैं। स्वागत वक्तव्य में प्रो.मनोज कुमार ने कहा कि वर्तमान समस्याओं के समाधान के लिए गांधीजी के दर्शन को आत्मसात करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि शोभना जी उन परम्पराओं की विरासत हैं जिनके मार्गदर्शन में हम और हमारे जैसे हजारों युवाओं ने गांधी विचार आधारित सामाजिक जीवन का अभ्यास किया था। प्रो.मनोज कुमार ने संचालन व आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर गांधीजी के जीवन पर आधारित वृत्तचित्र को दिखाया गया। साथ ही सेवाग्राम आश्रम की गतिविधियों पर आधारित वृत्तचित्र भी दिखाया गया। कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में अध्यापक, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित थे।

(अमित विश्वास)